## विचार बिन्दु

**स्वदेशी उद्योग, शिक्षा, चिकित्सा, ज्ञान, तकनीक, खानपान, भाषा, वेशभूषा एवं स्वाभिमान के बिना विश्व का कोई भी देश महान नहीं बन सकता।**

**–बाबा रामदेव**

# नशाखोरी के मकड़जाल में फंसते जा रहे हैं युवा

दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी वाला देश भारत है। युवा नशे के मकडजाल में फंसकर बर्बादी के कगार पर पहुंच रहे हैं। इससे उनकी सेहत तो खराब हो ही रही है साथ ही उनका सामाजिक स्तर भी गिरता जा रहा है। मीडिया रिपोर्ट्स की मानें तो नशे का सामान चाय पान की थडियों, मेडिकल स्टोरों और शिक्षण संस्थाओं के आसपास आसानी से उपलब्ध हो जाता है। सुनसान रास्ते व खंडहर इमारतें नशा करने वाले बच्चों व युवाओं के विशेष अड्डे हैं। नशाखोरी की आदत 12 से 20 साल तक के युवाओं में अधिक देखने को मिल रही है। इससे आने वाली पीढ़ी के भविष्य पर संकटों के बादल मंडराने लगे हैं। कभी चोरी छिपे बिकने वाले नशे का सामान आज धडल्ले से बिक रहा है। नशा मनुष्य को अपराध की ओर ले जाता है जो शांतिपूर्ण समाज के लिए अभिशाप का जहर है। मनोचिकित्सकों का कहना है कि युवाओं में नशे के बढ़ते चलन के पीछे आधुनिकता की चकाचौंध भरी बदलती जीवन शैली, परिवार से विभिन्न प्रकार के दबाव, परिवारिक झगड़े, इन्टरनेट की अत्यधिक लत, एकाकी जीवन, परिवार से दूर रहने, पारिवारिक कलह जैसे अनेक कारण हो सकते हैं।

युवा किसी भी देश का भविष्य होता हैं, लेकिन हमारा यह भविष्य नशे के समंदर में डूब रहा है। बड़ी संख्या में युवा नशे के दलदल में धंसते जा रहे हैं जहां बाहर निकल पाना लगभग नामुमकिन है। चाइल्ड लाइन इंडिया फाउंडेशन की एक रिपोर्ट अत्यधिक डरावनी है। इस फाउंडेशन का एक सर्वे बताता है कि देश में नशाखोरी करने वाले 65 प्रतिशत लोगों की उम्र 18 वर्ष से भी कम है। संस्था का यह भी कहना है कि इसमें युवाओं की हिस्सेदारी निरंतर बढ़ती जा रही है। युवा वर्ग नशे की चपेट में है। इनका असर बच्चों पर भी पड़ रहा है। इन पर नशा न सिर्फ शारीरिक बल्कि मानसिक दुष्प्रभाव डाल रहा है। नशे की पूर्ति के लिए अपराध से भी वह हिचक नहीं रहे हैं। थिंक चेंज नामक एक स्वतंत्र संस्था की एक हालिया रिपोर्ट में बताया गया है कोरोना के बाद देश में नशीले पदार्थों की खपत तेजी से बढ़ी है। रिपोर्ट में कहा गया है नशे की यह प्रवृत्ति देश की तरुणाई तक पहुँच गई है जिसके खतरनाक परिणामों से देश को जूझना पडेगा। नशे का कारोबार देश में 15 लाख करोड़ को पार कार चुका है। मिडिया रिपोर्ट्स के अनुसार आये दिन न सिर्फ लोग गांजा-चरस-अफीम-सुलेशन-ड्रग्स, कोरेक्स और नशीली इंजेक्शन के आदि हो रहे हैं बल्कि इनके सेवन से लोग मौत के शिकार भी हो रहे हैं।

**युवा किसी भी देश का भविष्य होता हैं, लेकिन हमारा यह भविष्य नशे के समंदर में डूब रहा है। बड़ी संख्या में युवा नशे के दलदल में धंसते जा रहे हैं जहां बाहर निकल पाना लगभग नामुमकिन है। चाइल्ड लाइन इंडिया फाउंडेशन की एक रिपोर्ट अत्यधिक डरावनी है। इस फाउंडेशन का एक सर्वे बताता है कि देश में नशाखोरी करने वाले 65 प्रतिशत लोगों की उम्र 18 वर्ष से भी कम है।**

नशा करने से लिवर, किडनी और फेफड़े खराब हो जाते हैं। डिप्रेशन, मानसिक अस्थिरता, फोकस और कंसन्ट्रेशन लॉस, भ्रम की बीमारी, आत्महत्या करने का खतरा और इन जैसी कई बीमारियों के होने का खतरा होता है। युवाओं में नशे की प्रवृत्ति कुछ वर्षों से निरंतर बढ़ रही है। कुछ में तो नशे की जरूरत इस कदर हावी होने लग जाती है कि वे कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। भारत में आधिकारिक तौर पर 10 से 17 वर्ष के बीच के 15.8 मिलियन बच्चे नशे के आदी हैं।

विशेषज्ञ चेतावनी देते हैं कि वास्तविक संख्या इससे कहीं अधिक है। भारत में मादक द्रव्यों के सेवन की सीमा और पैटर्न के पहले व्यापक राष्ट्रीय सर्वेक्षण में नैशनल ड्रग डिपैंडैंस ट्रीटमैंट सैंटर ने मादक द्रव्यों के सेवन से प्रभावित और तत्काल मदद की आवश्यकता वाले युवाओं की एक बड़ी आबादी पाई। शायद सबसे गंभीर चिंता 14-15 वर्ष की आयु के युवाओं की भागीदारी है। नशे के कारण सबसे अधिक प्रभावित युवा वर्ग है। इससे उनका मानसिक संतुलन खराब हो रहा है। एक बार नशे की लत में पड़ने के बाद इससे निकलना मुश्किल हो रहा है। युवा वर्ग इस दवाइयों की लत में इस कदर डूबा रहता है कि इसके दुष्परिणाम के बारे में नहीं सोचता। इसमें छोटे-छोटे बच्चे शामिल हैं। देश के अनेक राज्यों में सूखे नशे का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। सूखे नशे ने लोगों का सुख-चैन तो छीन ही लिया है। शराब के बाद सूखा नशा युवाओं की नसों में इस कदर दौड़ने लगा है कि परिवार के परिवार बर्बादी के कगार पर पहुंच गए हैं। चिट्टा, गांजा, चरस, हेरोइन और स्मैक को हाई सोसाइटी प्रोफाइल का हिस्सा मानने वाले परिवारों के बच्चे जवानी में ही अपना सब कुछ गंवा रहे हैं। नशा एक ऐसी बुराई है, जिसमे मानव का जीवन समय से पहले ही अंधकार और मौत की राह पर चला जाता है। नशाखोरी क्या है? एक खतरनाक बीमारी जिसके क्षिणक सुख के चलते इंसान अपनी जिंदगी से हाथ धो बैठता है। यह केवल एक बीमारी नहीं है बल्कि यह अनेक रोगों की जननी भी है।

भारत में पिछले तीन वर्षो से नशे का कारोबार पांच गुना तेजी से बढ़ रहा है। मुंबई या मायानगरी में यह उससे भी कहीं ज्यादा तेज गति से बढ़ रहा है। भारतीय प्रबंधन संस्थान रोहतक की तरफ से कराए गए एक सर्वे में पता चला है कि मादक पदार्थो का लगभग 84 प्रतिशत हिस्सा पाकिस्तान की तरफ से आता है। पाकिस्तान की सीमा से सटे राजस्थान और पंजाब के साथ ही मुंबई उसका सबसे पहला लक्ष्य होता है। नशे के अवैध कारोबार को रोकने के लिए जरूरी है की सरकार के साथ समाज जागरूक हो। यह अनेक सामाजिक, शारीरिक और आर्थिक बुराइयों और बीमारियों की जड़ है। इससे दूर रहना समाज और देश के हित में है। इसके लिए सामूहिक प्रयासों की जरुरत है। हमारा समाज तभी स्वस्थ होगा जब हम इन बुराइयों से अपने को दूर कर लेंगे। जब तक आप खुद नहीं चाहेंगे, कोई और आपका नशा नहीं छुड़ा पाएगा। सबसे पहले मन में ठान लें कि आप नशा छोड़ना चाहते हैं। फिर जो भी नशा कर रहे है उसकी तरफ देखे नहीं। अपने शरीर पर हो रहे शारीरिक नुक्सान का अनुमान करे। अपने परिवार और बच्चों के भविष्य को देखें। मन कड़ा करें और नशे को छोड़ दे।

**–अतिथि संपादक,**
**बाल मुकुन्द ओझा**
**वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार**

# मेवात क्षेत्र का प्रसिद्ध वाद्य ''भपंग''

पन्नालाल मेघवाल

**भपंग** वादन एक प्राचीन परंपरा है। यह मेवात क्षेत्र का प्रसिद्ध वाद्य वादन है। भपंग जोगी जाति के लोग बजाते हैं जो कि इस्माईल पंथ के गुरु गोरखनाथ के चेले हैं। इस्लाम धर्म को मानते हुए भी यह शिव के उपासक हैं। ऐसी मान्यता है कि भपंग की उत्पत्ति शिवजी के डमरू से हुई। शिवजी के ब्यावले में इसकी अहम् भूमिका है। इसके वादन के बिना शिवजी का ब्यावला अधूरा माना जाता है। इसको अलग-अलग प्रांतों में अलग नामों से जाना जाता है जैसे महाराष्ट्र में चोडका, पंजाब में तुंबा और मेवात में भपंग कहा जाता है।

भपंग एक तन्तु वाद्य हैं। यह डमरु की आकृति से मिलता जुलता कडवी लौकी के तुंबे से बनाया जाता हैं। इसके पेंदे में चमडा मढ दिया जाता हैं। चमड़े के बीचो-बीच गाय या भैंस के चमड़े की टिकड़ी लगाते हैं। टिकड़ी में छेद कर बकरे की आंत पिरो दी जाती हैं। वर्तमान में प्लास्टिक के तार का प्रयोग करने लगे हैं। इस तार को लकड़ी के गुटके से बांध दिया जाता हैं। बजाते समय इस यंत्र को काँख में दबा लिया जाता है।

बाएं हाथ से बकरे की आंत या प्लास्टिक के तंतु को ध्वनि के हिसाब से खींचकर अथवा ढ़ीला छोड़ कर उस पर दाएँ हाथ से लकड़ी के तीखे गुटके से प्रहार किया जाता है। इस प्रहार और तंतु खिंचाव के तालमेल से मनचाही मधुर ध्वनि निकाली जाती है। भपंग वाद्य यंत्र एवं लोकगीत या गाथा के साथ श्रोतागण इसके वादन एवं गायन का भरपूर आनंद उठाते हैं। राजस्थान में अलवर जिला मेवाती क्षेत्र कहलाता हैं। जोगी जाति के मेवाती लोग भपंग वाद्ययंत्र के साथ पाण्डुन का कड़ा, राजा भर्तहरि, भगत पूरणमल, हीर-राँझा एवं गोगा-पीर की मेवाती में लोक गाथाएँ गाते हैं। यह मेवाती लोक भजन, गीत एवं पैरोडी भी गाते हैं। महाभारत का पाण्डुन का कडा मेवाती लोक गाथा मेवात की विशेष पहचान है।

युसूफ खां मेवाती भपंग वादन के सिद्धहस्त कलाकार हैं। उन्हें यह कला उनके पिता स्वर्गीय उमर फारूक से विरासत में मिली। उनके पिता उमर फारूक एवं उनके दादा स्वर्गीय जहूर खां मेवाती भपंग वादन के अंतरराष्ट्रीय कलाकार रहे हैं। उनके परदादा कँवरनाथ एवं उनके बड़े भाई हुसैना भपंग, जोगिया, सारंगी एवं चिकारा के माहिर वादक रहे हैं। संगीत के इस परिवेश में ही युसूफ खां ने भी भपंग वादन कला को आत्मसात कर लिया।

उनके पिता उमर फारुख एवं दादा जहूर खां मेवाती ऐसे सिद्धहस्त भपंग वादक थे कि उनकी पहचान देश ही नहीं विदेश में भी है। उन्होंने मुंबई सहित पूरे देश में अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए, वहीं दक्षिण और पूर्वी अफ्रीका में भी अपने भपंग वादन कार्यक्रम से धाक जमाई। उमर फारूक मेवाती ने एम एफ हुसैन द्वारा निर्देशित फिल्म मीनाक्षी ए टेल ऑफ थ्री सिटीज में भपंग पर बैकग्राउंड साउंड दी और लोक कलाकारों के साथ प्रदर्शन किया। उन्होंने 40 देशों की यात्रा की। जहूर खां मेवाती ने मुंबई में रहते हुए न्यू देहली, गंगा जमुना तथा आँखें फिल्म में अपनी भपंग का कमाल दिखाया।

उमर फारुख एवं उनके पिताजी जहूर खां मेवाती भपंग वादन के साथ लोकगीत गाने में भी सिद्धहस्त थे। जब वे अपनी भपंग की लय पर सखी मेरा बालम जन्टर

मैन या गोला का दर्द नै मारी हकीम जी, जमीला तेरो दुनिया से नखरो न्यारो, जिठानी तेरे देवर नै मेरयो धरयो है भंमीरी नामक लोकगीत गाते थे, तो लोग झूम उठते थे। यह दोनों पिता-पुत्र जब अपनी पूरी मस्ती के साथ भपंग के लटके-खटके और गीतों के बोल के उतार-चढ़ाव के साथ थिरकते-मचकते और अपने सिर को झटकते भपंग बजाते थे तो लगता था जैसे भपंग बजने नहीं गाने लगी है।

**–पन्नालाल मेघवाल,**
**वरिष्ठ लेखक एवं स्वतंत्र पत्रकार**

## नहर का पानी बीकनेर पहुंचा

- **किसानों को नौ से मिलेगा सिंचाई के लिए पानी**

**बीकानेर,** (निसं)। नहर बंदी खत्म होने के साथ ही इंदिरा गांधी नहर का पानी बीकानेर पहुंच गया है। अब तक गजनेर लिफ्ट से शोभासर में पानी पहुंच गया है, जबकि बीछवाल जलाशय में भी बुधवार देर रात तक पानी आ जाएगा। उधर, इंदिरा गांधी नहर विभाग ने किसानों को किसानों को सिंचाई का पानी देने के लिए भी रेगुलेशन जारी कर दिया है। किसानों को तीन में से एक समूह पानी दिया जाएगा। किसानों को नौ जून से सिंचाई के लिए पानी मिलेगा।

हरिके बेराज से पिछले दिनों पानी छोड़ दिया गया था, जो लंबा सफर तय करके बीकानेर पहुंच गया है। गजनेर लिफ्ट से होते हुए शोभासर पानी आ गया है। शोभासर जलाशय जल्दी ही पूर्ण क्षमता के साथ भर जाएगा। वहीं, कंवरसेन लिफ्ट से बीछवाल जलाशय में पानी देर रात पहुंचेगा। दोनों ही जलाशयों को पूरा भरा जाएगा। बीकानेर के दोनों जलाशयों के भरने के बाद नियमित रूप से आपूर्ति शुरू कर दी जाएगी। फिलहाल बीकानेर में ओड और ईवन नंबर के आधार पर एक दिन छोड़कर एक दिन पानी दिया जा रहा है। अब बीकानेर को हर रोज पानी की आपूर्ति होगी। वैसे इस बार पानी की कमी नहीं होने के कारण कई क्षेत्रों में पानी मिलता रहा है।

इंदिरा गांधी नहर परियोजना के तहत फसल खरीफ 2023 के दौरान 9 जून सुबह 6 बजे से 4 जुलाई सायं 6 बजे तक नहरों को तीन में से एक समूहों में सिंचाई के लिए पानी चलाने के लिए समूहों का विवरण एव चक्रीय कार्यक्रम जारी किया गया है। सिंचित क्षेत्र विकास आयुक्त डॉ नीरज के पवन की ओर से जारी इस कार्यक्रम के अनुसार 9 जून सुबह 6 से 17 जून सायं 6 बजे तक क, ख, ग समूह की वरीयता समूह में तथा 17 जून सायं 6 से 26 जून प्रात: 6 बजे तक ख ग, क तथा 26 जून प्रात: 6 बजे से 4 जुलाई सायं 6 तक ग,क,ख ग्रुपों का वरीयता समूह रहेगा।

## ब्यावर कॉलेज में जापानी तकनीक ''मियावाकी'' से पौधारोपण

- **इस तकनीक में स्थानीय पौधों को कम दूरी पर क्रमबद्ध तरीके से लगाया जाता है**

**ब्यावर,** (निसं) सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय परिसर और पुस्तकालय परिसर में शहतूत, बिल्व, आंवला , गोंदा, सीताफल, कचनार, नीम आदि की लगभग 10 प्रजातियां के 300 पौधों को वृक्ष बनाने के लक्ष्य से सघन पद्धित से रोपण किया जा रहा है। यह पौधारोपण सघन वन की जापानी विधि मियावाकी तकनीक से हुआ है।

इस तकनीक में स्थानीय पौधों को कम दूरी पर क्रमबद्ध तरीके से लगाया जाता है, ताकि सूर्य की रोशनी भूमि तक न पहुंचे और खरपतवार ना उगे। भूमध्य रेखीय प्रदेश में भी पौधे इसी प्रकार प्रतिस्पर्धा में तेजी से लंबवत बढ़ते हैं, साथ ही इस तकनीक से पौधे 10 गुना तेजी से वृक्ष बनते हैं और कम स्थान पर भी अधिक वृक्षारोपण संभव हो पाता है। अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ (उच्च शिक्षा) राजस्थान द्वारा एक शिक्षक एक वृक्ष के संकल्प के तहत वर्ष पर्यंत वृक्षारोपण एवं वृक्षों का पालन पोषण का कार्य निरंतर रूप से किया जाता है।

विश्व पर्यावरण दिवस सप्ताह के उपलक्ष में सघन वृक्षारोपण अभियान सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय के पुस्तकालय परिसर में मात्र 800 वर्ग गज भूमि में 500 वृक्षों के सघन रोपण के रूप में संपन्न किया गया। कार्यक्रम में ए.बी.आर.एस.एम. राजस्थान उच्च शिक्षा के महामंत्री डॉ एस के बिस्सु एवं महाविद्यालय के अधिकांश प्रोफेसर ने पौधारोपण किया। सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम का शुभारंभ क्रिकेट कोच बंटी गुजराती के हाथों से वृक्षारोपण से किया गया। इस सघन वन की सार संभाल के लिए खाद, दवा सिंचाई और नियमित देखभाल सभी व्यवस्थाएं भी की गई है। मियावाकी पद्धित का पालन बिल्कुल वैज्ञानिक ढंग से किया जाता है जिसमें प्रक्रियाएं चरणबद्ध तरीके से फ़ॉलो की जाती है। सबसे पहले मिट्टी के संघटन की जांच की जाती है और बायोमास को मापा जाता है। मिट्टी की बनावट की जांच आवश्यक है क्योंकि यह उर्वरता, जल प्रतिधारण, अंत:स्त्रवण आदि को निर्धारित करने में मदद करती है। ये सभी तत्व जंगल की वृद्धि और उसकी धारणीयता को निर्धारित करते हैं। जमीन को पौधों की वृद्धि के लिए पोषक तत्व प्रदान करने के लिए उर्वरक की आवश्यकता होती है। वेधन सामग्री पौधों को अपनी जड़ों को जमीन में गहराई तक ले जाने में सहायक होती हैं। वेधन को बढ़ाने के लिए चावल की भूसी, गेहूं की भूसी, या मूंगफली के गोले एक उत्कृष्ट संसाधन हो सकते है। एक जंगल को विकसित करने के लिए एक जमीन में महत्वपूर्ण जल प्रतिधारण शक्ति होनी चाहिए।

# किशनगढ़ बास में कैरी-बैग बॉक्स लगाकर भूली नगर पालिका

**किशनगढ़ बास,** (निसं)। शहर में बस स्टैंड, सब्जी मंडी, स्कूल, अस्पताल, सुलभ शौचालय, मंदिर आदि जैसे अनेक स्थानों की दीवार पर कैरी बैग बॉक्स लगा है। इस बॉक्स को खरीद कर लगाने में सरकार का कितना रुपया खर्च हुआ होगा यह तो अधिकारी ही बता सकते हैं। लेकिन यह सच है कि जिस उद्देश्य से यह बॉक्स लगे हैं वह उद्देश ना तो सरकार के पूरे हो रहे हैं और ना ही इनका लाभ जनता को मिल पा रहा है। केवल शोपीस बनकर दीवार पर लगे बॉक्स करीब 9 माह पहले किशनगढ़ बास में लोगों को मात्र 5 रुपए में कैरी बैग उपलब्ध कराने व पॉलिथीन से छुटकारा दिलाने के लिए लगाए गए थे।

किशनगढ़ बास में अस्पताल के बाहर सुलभ शौचालय की दीवार पर लगा कैरी बैग बॉक्स।

दीवारों पर लगाए गए बॉक्स की हकीकत जानकर अचंभित हों उठेंगे की पहली बार जब बॉक्स लगाए गए थे उसी दौरान बॉक्स में कैरी बैग डाले गए उसके बाद ना तो कोई बॉक्स देखने आया और ना बॉक्स के अंदर कैरी बैग डाले गए है। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है की प्लास्टिक मुक्त भारत स्वच्छ भारत जैसे कार्यक्रम के प्रति अधिकारी कर्मचारी कितने संवेदनशील हैं। लोगों का कहना है कि जब कैरी बैग बॉक्स के अंदर डालने ही नहीं है तो फिर इन्हें जगह जगह दीवारों पर लगाने से फायदा क्या हो रहा है।

पार्षद हेमेंद्र चौधरी ने बताया कि दुकान की दीवार पर कैरी बैग बॉक्स लगा हुआ है परंतु जब से बॉक्स लगा है उसके बाद से ही खाली है। पार्षद तेज सिंह सैनी ने बताया कि वार्ड के हनुमान मंदिर की दीवार पर बॉक्स लगा हुआ है लेकिन खराब पड़ा है।

पार्षद मीनाक्षी मनोज मित्तल ने बताया कि अस्पताल गेट के बाहर सुलभ शौचालय की दीवार पर कैरी बॉक्स लगा हुआ है परंतु अक्सर खाली मिलता है। यही हाल सब्जी मंडी बस स्टैंड स्कूल आदि की दीवार पर लगे बॉक्स का बना हुआ है।

## नहर टूटने से खेतों में भरा पानी

**श्रीगंगानगर,** (निसं)। जिले के रायसिंहनगर में पंद्रह पीएस के पास नहर में कटाव आ गया। किसानों ने इसे बांधने का प्रयास किया। दोपहर तक नहर बांधने का काम जारी था। यह नहर बुधवार को लगातार दूसरी बार टूटी। करीब पंद्रह दिन पहले भी यह नहर टूट गई थी। उस समय किसानों ने इसे कच्चा बांध दिया था लेकिन अब दोबारा नहर में पानी का बहाव तेज आने से फिर से नहर टूट गई।

नहर टूटने से पानी बहकर आसपास के खेतों में फैल गया। इन खेतों में नरमे की फसल बोई हुई थी। पानी जमा हो जाने से बोई हुई फसल को नुकसान हो गया। किसानों को यहां करीब पंद्रह दिन के अंतराल से दूसरी बार नुकसान झेलना पड़ा है। इससे पहले किसानों ने यहां नरमे की फसल बोई हुई थी। पंद्रह दिन पहले नहर टूट जाने पर भी यहां बुवाई बेकार हो गइ थी। बुधवार को एक बार फिर नहर टूट जाने के बाद किसानों की नरमे की फसल को नुकसान झेलना पड़ा। सुबह नहर टूटने की जानकारी मिलते ही किसानों ने इस बारे में आसपास के अन्य किसानों को बताया। किसानों ने अपने स्तर पर नहर को बांधने की कोशिश शुरू कर दी।

## राशिफल गुरूवार 8 जून, 2023

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, पंचमी तिथि, गुरूवार, विक्रम संवत 2080, श्रवण नक्षत्र सांय 6:54 तक, ऐन्द्रयन योग सांय 6:58 तक, कौलव करण प्रात: 8:25 तक, चन्द्रमा मकर राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थिति:** सूर्य-वृष, चन्द्रमा-मकर, मंगल-कर्क, बुध-वृष, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज महापात योग प्रात: 8:37 तक है। आज नाग पंचमी (बंगाल में), कोकिला पंचमी है।

**सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया:** शुभ सूर्योदय से 7:22 तक, चर 10:43 से 12:26 तक, लाभ-अमृत 12:26 से 3:50 तक, शुभ 5:33 से सूर्यास्त तक।

**राहूकाल:** 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 5:36, सूर्यास्त 7:15

**मेष**
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

**सिंह**
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

**धनु**
व्यावसायिक मामलों में दुविधा बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भागदौड़ रहेगी। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।

**वृष**
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

**कन्या**
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है।

**मकर**
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

**मिथुन**
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

**तुला**
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा है। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

**कुंभ**
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

**कर्क**
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

**वृश्चिक**
व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

**मीन**
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

# अवैध खनन से डीडवाना का पीर पहाड़ी क्षेत्र नष्ट हो रहा है

**डीडवाना,** (निसं)। नागौर रोड स्थिति कोलिया गांव की पहाड़ियों और डीडवाना के पीर इब्राहिम शहीद दरगाह क्षेत्र के अस्तित्व को आसपास के पहाली क्षेत्र में हो रहे अवैध खनन से खतरा होने लगा है। खननकर्ता खनन की लीज सीमा क्षेत्र से बाहर जाकर अवैध खनन में जुटे हैं और सरकार को लाखों रुपए के राजस्व का नुकसान पहुंचा रहे हैं। इस क्षेत्र में कभी बारूद से विस्फोट तो कभी कम्प्रेशर के जरिए चट्टानों और पहाड़ियों को चीरकर खोखला किया जा रहा है और यहां से रोजाना अनेकों ट्रकों व ट्रैक्टरों के माध्यम से खनन कर निर्माण स्थलों पर भेजा जा रहा है।

गौरतलब है कि कोलिया गांव और डीडवाना क्षेत्र में पीर पहाड़ी का इलाका पहाड़ी क्षेत्र है, जहां खनन विभाग ने खननकर्ताओं को लीज दे रखी है, मगर इन क्षेत्रों में अवैध खनन भी किया जा रहा है। खनन माफिया खुलेआम जेसीबी व अन्य उपकरणों से पहाड़ी क्षेत्र की खुदाई कर डंपरों से ढुलाई कर रहे हैं। वहीं पहाड़ी क्षेत्र की तलहटी व घाटी को भी खोदकर चुनाई पत्थर व झींकरा का दोहन किया जा रहा है, जिससे जगह जगह खाईयां व गड्डे बन गए हैं।

जानकारों के मुताबिक कोलिया और दरगाह क्षेत्र के पहाड़ी क्षेत्र का पत्थर व झींकरा अच्छी गुणवत्ता का होने से इसकी डिमांड अधिक है, इसका फायदा उठाकर अवैध

- **अवैध खनन ने पहाड़ों को किया जमीदोंज, डंपरों व ट्रैक्टरों से किया जा रहा दोहन**

खननकर्ता नियम कायदों को ताक में रखकर खूब चांदी कूट रहे हैं। इसी के चलते क्षेत्र में अवैध खनन तेजी से जारी है।

जानकारी के अनुसार मुगल बादशाह अकबर ने परगना डीडवाना के दरगाह मुजावरात की खिदमत के बदले में 500 बीघा जमीन सदके में दी थी, जिसका पट्टा 13 रमजान 983 हिजरी को जारी हुआ था। वक्त जायदाद व आराजी इसी भूमि का भाग है। इसके अलावा राज्य सरकार ने भी दरगाह की जमीन को 270 बीघा 6 बिस्वा माना है।

अवैध खनन से जहां सरकार को राजस्व की क्षति हो रही है। वहीं, जिम्मेदार अफसरों की मौन स्वीकृति से क्षेत्र में अवैध खनन कारोबारियों के हौसले बुलंद हैं। यहां से खनन किए जा रहे चुनाई पत्थर व झींकरा को ऊंचे दामों पर बेचा जा रहा है।

ब्लास्टिंग से लोग भयभीत : इन क्षेत्रों में किए जा रहे खनन के लिए बारूद की सहायता से ब्लास्ट किए जा रहे हैं। ब्लास्ट के कारण जोरदार धमाका होता है, जिससे कोलिया गांव के सैकड़ों मकानों में दरारें आ गई हैं। वहीं दरगाह क्षेत्र में आने वाले जायरीन भी ब्लास्टिंग से भयभीत हो रहे हैं, वहीं समीप स्थित ग्राम बालिया व ढाणी में रहने वाले लोग भी धमाकों के चलते दहशत में रहने को मजबूर है।

**अवैध खनन पर रोक की मांग :** इस संबंध में लोगों ने गत दिनों जिला कलेक्टर को जानकारी देकर दरगाह क्षेत्र में हो रहे अवैध खनन पर रोक लगाने की मांग की थी। उन्होंने बताया कि यह पूरा क्षेत्र वक्फ की संपत्ति है, जिस पर लंबे समय से अवैध खनन किया जा रहा है। बार बार प्रशासन को अवगत कराने के बावजूद अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। अत: अवैध खनन को रोका जाना बेहद जरूरी है।